

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

D

त्ता संत्रं । जान्या (देवे यह तह समानेशा स्ना (द्वा मात्र वा स्वा सामार्थे के शास्त स्वा या (व्यव को देश मात्र या या विद्य सामार्थे को देश स्व के देश मात्र वा या (व्यव को देश के हिस मात्र वा या प्रे के स्व के हिस में स्व के विद्य के कि सामार्थे के स्व के सामार्थे के सामार्थे





ित्रमाऽत्रमताव्यवावायागोयत्या स्वातव्यमान्या अते। स्विधित्यवबद्धिते।श्वरातिवरगास्य मार्केवनाड्यार प्रमान्यव अगानीनाउनपाष्ट्रहासावित नेवामुणा ति मादित । अगापनपणा बाधारा स्व उत्तिमा स्वरुक्त संश्विताता सुनावा। स-तिश्वाः श्रम्भाति वनते तत चाव अरापा श्रीमातः करनेवा। द्विता सवेद्वपविभाग सवे स्थाने एक वर्षे व्याप्त स्थाने एक वर्षे वर्षे सातः समितः ॥ इक्टाने युन्तिन असीन निश्ची भी क्यु मुस्मितः ॥ इक्टाने युन्तिन असीन निश्ची भी क्यु मुस्मिति

त्तवर्जितावा ॥ अत्रो ॥ वार्षवात्यव्यत्रं शस्त्रो त्यात्यत्वत्ते त्यावित्यत्ते प्रविद्यात्रं विद्यात्यत् । १९५१। मितादिवा बतु खरणा संवा १२कित स्युर्धिया। रूपरणान विभाग रवेड क्षरण ने बल्यासिकल्याशानिकिक्तास्तिन अशानते व अशानाना ना ना ने स्पूर्व द ॥ ज्यासाधनायः १९५ शहरामि १२ शहरायात्य मन् असामान्य मन् १५ सामान्य मन् र्याया गुरावित्रप विभागे रावेड । श्राट स्थाभ्या ए या ध्राराप श्राति सते सते सा नित्वपः १६२०त्रा वाश्वरावित्रा निर्मिनितो धन ध्ये अस्ति विकासिक नित्व



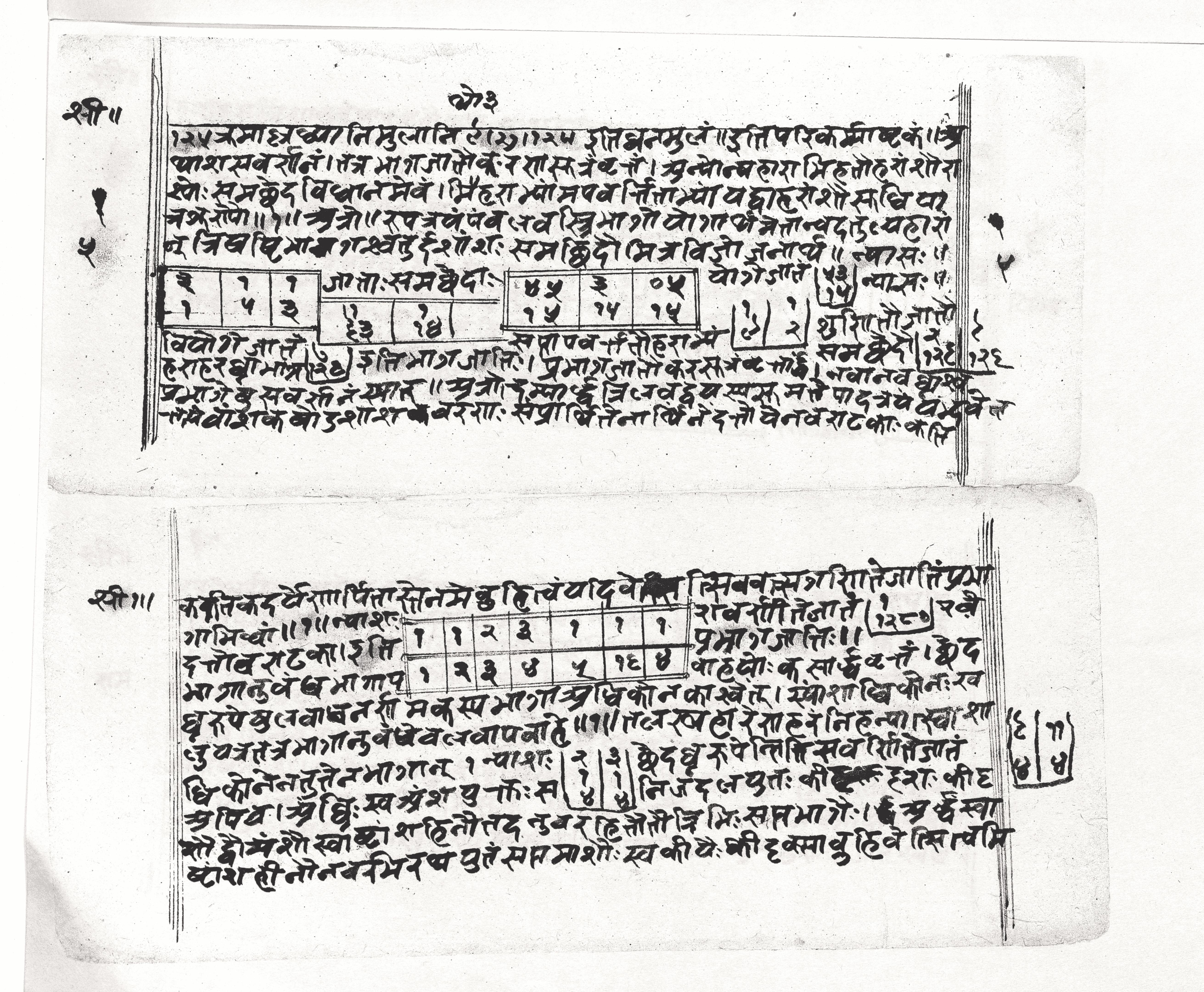
(3)

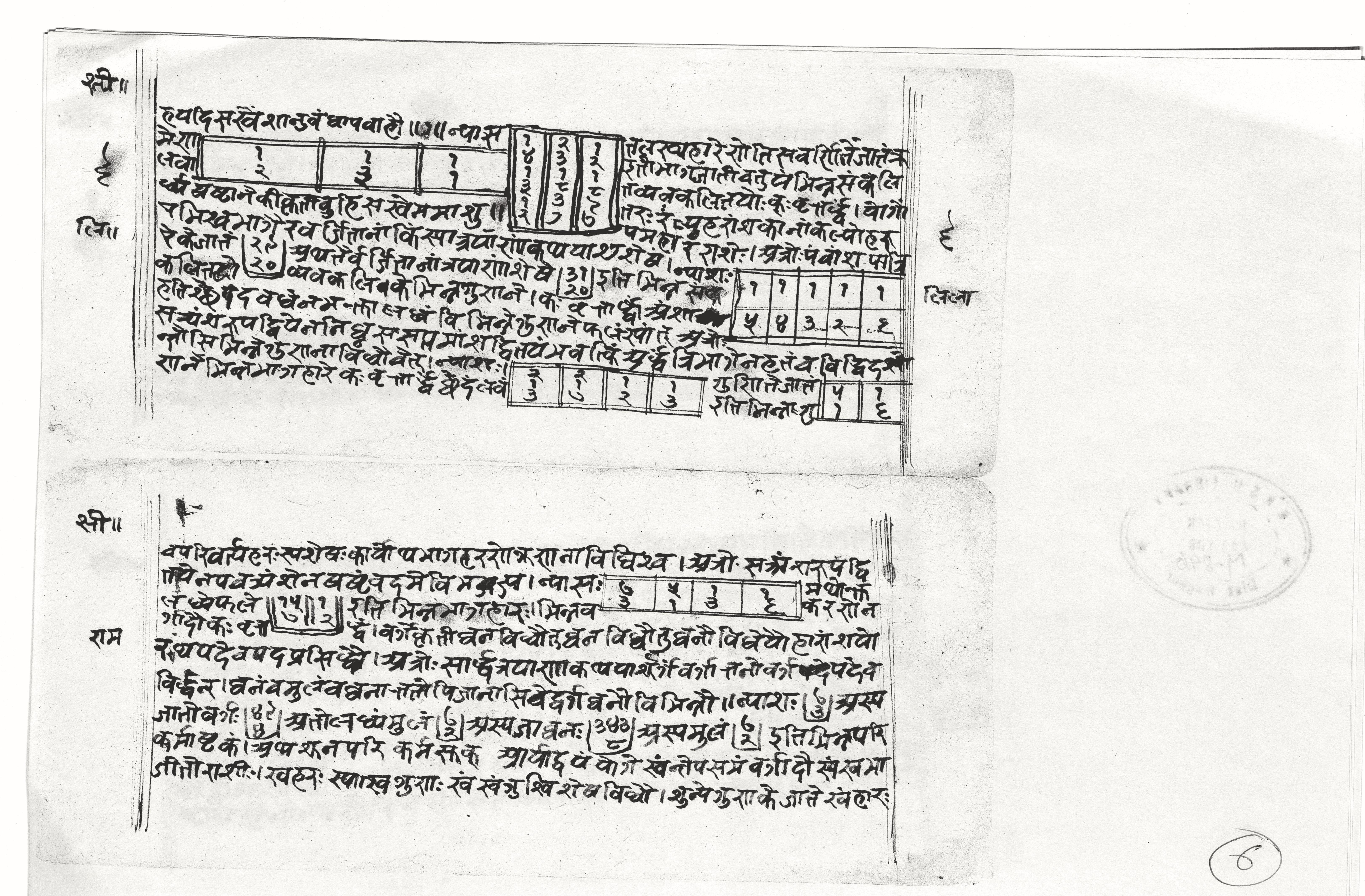
2711

मन्तिर्देशस्यात्यदं । अत्रोदि शक्तः। अतंवत्रतीयात्यां स्वार्गां एविद्वत्तां नां तर्गते क्रितां नां तर्गते क्रितां नां त्या प्रवृत्व प्रवृत्व प्रवृत्व विद्व विद्व

शा

तिब्रः १४७ रैंगडे येर्जिते वर्णावत्रशी हैंछु पंवाता रत्य ग्रत्यो रेक्वेत रहे पुरित्त से हुन्य प्राप्त से हुन्य से से हु





,CREATED=22.10.20 11:28
,TRANSFERRED=2020/10/22 at 11:29:59
,PAGES=6
,TYPE=STD
,NAME=S0004358
,Book Name=M-846-LILAVATI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE5=00000005.TIF

[OrderDescription]